➔ विंध्याचल पर्वत श्रेणी चूना पत्थर से निर्मित है, जो कि गुजरात, मध्यप्रदेश तथा बिहार में विंध्याचल भारनेर, कैमूर तथा पार्श्वनाथ की पहाड़ियों के रूप में 1050 किमी. की दूरी में विस्तृत है।
➔ इस पर्वत श्रेणी की औसत ऊँचाई लगभग 600 से 900 मीटर के मध्य पाई जाती है।
➔ विंध्याचल पर्वतीय क्षेत्र में हीरे का प्रमुख उत्पादक क्षेत्र- पन्ना (मध्यप्रदेश) अवस्थित है।
➔ विंध्याचल पर्वत श्रेणी, नर्मदा नदी घाटी की उत्तरी सीमा का निर्धारण करती है।

* सतपुड़ा पर्वत श्रेणी:- यह एक खंड पर्वत है, जो कि गुजरात तथा मध्यप्रदेश में राजपीपला, गाविलगढ़, महादेव तथा मैकाल पहाड़ियों के रूप में विस्तृत है।
➔ यह पर्वत श्रेणी नर्मदा भ्रंश घाटी की दक्षिणी सीमा तथा तापी भ्रंश घाटी की उत्तरी सीमा का निर्धारण करती है।
➔ इस पर्वत श्रेणी की महादेव पहाड़ियों में सर्वोच्च पर्वत-चोटी- धूपगढ़ तथा पंचमढ़ी प्रसिद्ध पर्वतीय स्थल जैव आरक्षित क्षेत्र है।
➔ महादेव पहाड़ियों की सर्वोच्च चोटी- अमरकंटक से नर्मदा तथा सोन नदी का उद्गम होता है तथा महादेव पहाड़ियों के दक्षिण में स्थित बैतुल के पठार से तापी नदी का उद्गम होता है।

* प्रायद्वीपीय पठारी भाग में स्थित प्रमुख पठार:-

Ⓐ. मालवा का पठार:-
➔ यह पठार अरावली पर्वतमाला, विंध्याचल श्रेणी, मेवाड़ के पठार, मध्य भारत के पठार और बुन्देलखंड पठार के मध्य में स्थित है।
➔ इस त्रिभुजाकार पठार पर पाई जाने वाली लावा की परत से निर्मित काली मिट्टी, कपास की खेती के लिए उपयोगी होती है।
➔ इस पठार पर बेतवा, पार्वती, काली, सिंधु, चम्बल आदि नदियाँ प्रवाहित होती है, जो आगे यमुना नदी में मिल जाती है।

Ⓑ. बुन्देलखंड का पठार:-
➔ मालवा के पठार का उत्तर-पूर्वी भाग को बुंदेलखंड के पठार के नाम से जाना जाता है। बुंदेलखंड में चंबल एवं यमुना नदियों के प्रवाह से बड़े- बड़े बीहड़ खड्ड का निर्माण होने से भूमि ऊबड़-

Scanned with CamScanner

खाबड़ व अनउपजाऊ बन गई है।

➔ इस पठार का ढाल दक्षिण से उत्तर की ओर है, जहाँ केन तथा बेतवा नदियाँ बहते हुये गहरी घाटियों व जलप्रपातों का निर्माण करती हैं।

Scanned with CamScanner

"भारत का भूगोल"

भारत: एक परिचय:-

* अन्य नाम:- आर्यावर्त, भारतवर्ष, हिन्दुस्तान, इण्डिया
* भौगोलिक स्थिति:- उत्तर-पूर्वी गोलार्द्ध में (एशिया महाद्वीप)
* विस्तार:- (अ) अक्षांशीय विस्तार- 8°4' उत्तरी अक्षांश से 37°6' उत्तरी अक्षांश (3214 किमी०)
  (ब) देशांतरीय विस्तार- 68°7' पूर्वी देशांतर से 97°25' पूर्वी देशांतर (2933 किमी०)
* अंतिम बिन्दु:- पूर्व में- किबिथु (अरुणाचल प्रदेश), पश्चिम में- गोरमाता (गुजरात),
  उत्तर में- इंदिरा कॉल (जम्मू-कश्मीर), दक्षिण में- कन्याकुमारी (तमिलनाडु)
* कन्याकुमारी, भारत की मुख्य भूमि का दक्षिणी बिन्दु है, जबकि भारत का दक्षिणतम बिन्दु- इन्दिरा प्वाइंट (अण्डमान-निकोबार द्वीप समूह) है।
* भारत का कुल क्षेत्रफल:- 32,87,263 वर्ग किमी. (विश्व के कुल क्षेत्रफल का 2.42% भाग)
* भारत की आकृति:- चतुष्कोणीय (भारत की मुख्य भूमि की आकृति)
* भारत का मानक समय:- उत्तरप्रदेश राज्य के इलाहाबाद जिले के नैनी का समय, जो कि ग्रीनविच मीन टाइम से 05 घंटे 30 मिनट आगे है।
* भारत मानक समय रेखा:- 82½ डिग्री पूर्वी देशांतर

Scanned with CamScanner

* भारत में कर्क रेखा का विस्तार:- आठ राज्यों में- गुजरात, राजस्थान, मध्यप्रदेश, झारखण्ड छत्तीसगढ़, पश्चिम बंगाल, त्रिपुरा, मिजोरम।
* भारत की अंतराष्ट्रीय सीमाएँ:- (अ). स्थलीय सीमा:- 15,106 किलोमीटर
(ब). कुल जलीय सीमा:- 7516.6 किलोमीटर (द्वीपों सहित)
→ भारत की मुख्य भूमि की कुल जलीय सीमा:- 6100 किलोमीटर
* भारत की जलवायु:- उष्ण कटिबंधीय जलवायु
* भारत का राष्ट्रीय पशु:- बाघ (पैंथरा टाइग्रिस-लिन्नायस)
* भारत का राष्ट्रीय विरासत पशु:- हाथी (एलेफस मक्सीमस)
* भारत का राष्ट्रीय पक्षी:- मोर (पावो क्रिस्टेटस)
* भारत का राष्ट्रीय वृक्ष:- बरगद (फिकस बेंघालेनसिस)
* भारत का राष्ट्रीय पुष्प:- कमल (निलम्बो न्युसिफेरा गार्टन)
* भारत का राष्ट्रीय गीत:- वंदे मातरम् (बंकिमचंद्र चट्टर्जी द्वारा रचित, 24 जनवरी, 1950 को मान्यता)
* भारत का राष्ट्रगान:- जन-गण-मन (रवीन्द्रनाथ टैगोर द्वारा रचित, 24 जनवरी, 1950 को मान्यता)
* भारतीय राष्ट्रीय जलीय जीव:- गंगा डॉल्फिन
* भारतीय राष्ट्रीय नदी:- गंगा (उत्तराखंड के गंगोत्री हिमनद से उद्गमित)
* भारत का राष्ट्रीय वाक्य:- सत्यमेव जयते
* भारत की राजकीय भाषा:- हिन्दी
* भारत की राष्ट्रीय लिपि:- देवनागरी लिपि
* भारत का राष्ट्रीय चिन्ह:- सारनाथ स्थित अशोक स्तंभ की अनुकृति
* भारत का राष्ट्रीय ध्वज:- तिरंगा (22 जुलाई, 1947 ई. को भारतीय राष्ट्रीय ध्वज के रूप में मान्यता)

→ भारत का क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़ा राज्य- राजस्थान तथा सबसे छोटा राज्य-गोवा है।
→ भारत का क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़ा केन्द्र शासित प्रदेश- अंडमान-निकोबार द्वीप समूह तथा सबसे छोटा केन्द्र शासित प्रदेश- लक्षद्वीप है।

* भारत के महत्वपूर्ण चैनल:-
(A). 8 डिग्री चैनल- मालदीव व मिनिकाय के मध्य
(B). 9 डिग्री चैनल- लक्षद्वीप व मिनिकाय के मध्य
(C). 10 डिग्री चैनल- अण्डमान और निकोबार के मध्य
(D). पाक जलडमरूमध्य- भारत और श्रीलंका के मध्य
(E). मन्नार की खाड़ी- दक्षिण-पश्चिम तमिलनाडु और श्रीलंका के मध्य
(F). कोको जलडमरूमध्य- कोको द्वीप (म्यांमार) व ऊरी अंडमान के मध्य
(G). डंकन पास- दक्षिणी अंडमान और लघु अंडमान के मध्य

Scanned with CamScanner

* भारत के राज्य और केन्द्र शासित प्रदेश :-

> भारत में क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़ा राज्य – राजस्थान (3,42,239 वर्ग किमी.) है तथा सबसे छोटा राज्य - गोवा (3702 वर्ग किमी.) है।

> भारत में क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़ा केन्द्र शासित प्रदेश- अंडमान निकोबार द्वीप समूह (8249 वर्ग किमी.) है तथा सबसे छोटा केन्द्र शासित प्रदेश- लक्षद्वीप (32 वर्ग किमी.) है।

* भारत की भूगर्भिक संरचना:-

→ किसी भी देश की भू-गर्भिक संरचना के अध्ययन के अंतर्गत उस देश में मिलने वाली चट्टानों की प्रकृति एवं उसके स्वरूप की जानकारी प्राप्त होती है।

→ भारत में विभिन्न युगों में मोड़दार पर्वतों की उत्पत्ति निम्न चार अवस्थाओं में हुई -

(अ). प्रथम चरण - अरावली पर्वत की उत्पत्ति,

(ब). द्वितीय चरण - कैलीडोनियन युगीन पर्वतों (पूर्वी घाट पर्वत) की उत्पत्ति,

(स). तृतीय चरण - हर्सीनियन युगीन पर्वतों (विंध्याचल, सतपुड़ा) की उत्पत्ति,

(द). चतुर्थ चरण - अल्पाइन क्रम के पर्वतों (हिमालयी पर्वत श्रेणी) की उत्पत्ति।

→ वृहद हिमालय की उत्पत्ति के समय भारतीय प्लेट के तिब्बत प्लेट से टकराने के फलस्वरूप भारत के पश्चिमी भाग के भ्रंशित होकर समुद्र के अंदर अधोगमित होने से पश्चिमी घाट भ्रंशित पर्वत का निर्माण हुआ।

→ इन चारों मोड़दार पर्वत श्रेणियों में बलुआ पत्थर, चूना पत्थर जैसी अवसादी तथा स्लेट व संगमरमर जैसी कायांतरित चट्टानें पाई जाती है।

→ भारत की भूगर्भिय संरचना में प्राचीनतम और नवीनतम दोनों प्रकार की चट्टानें पाई जाती है।

→ एक ओर प्रायद्वीपीय भारत में आर्कियन युग की प्राचीनतम चट्टानें पाई जाती है, तो दूसरी ओर मैदानी भागों में क्वाटर्नरी युग की नवीनतम परतदार चट्टानों की बहुलता है।

→ इन भूतत्वीय विशेषताओं के आधार पर भारत को निम्न तीन भागों में बाँटा जाता है-

दक्षिण का प्रायद्वीपीय पठार:-

→ यह गोंडवाना लैंड का ही एक भाग है, जो प्राचीनतम से लेकर प्राचीन चट्टानों का बना है।

→ यह आर्कियन युग की आग्नेय चट्टानों से निर्मित है, जो वर्तमान में नीस व शिष्ट के रूप में अत्यधिक रूपान्तरित हो चुकी है।

(क) आर्कियन क्रम की चट्टानें:-

→ आर्कियन क्रम की चट्टानों का निर्माण तप्त पृथ्वी के ठण्डा होने के फलस्वरूप हुआ।

→ आर्कियन क्रम की चट्टानें प्राचीनतम चट्टानें है अर्थात् ये मूलभूत चट्टानें है।

→ आर्कियन क्रम की चट्टानें भारत में खनिज संपदा का भंडार है, जिनमें लोहा, ताँबा, मैंगनीज, अभ्रक, डोलोमाइट, सीसा, जस्ता, सोना व चाँदी जैसी धात्विक व अधात्विक खनिजों की प्रचुरता है।

Scanned with CamScanner

→ आर्कियन क्रम की चट्टानों का विस्तार-कर्नाटक, तमिलनाडु, आंध्रप्रदेश, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, ओडिशा, झारखंड और राजस्थान के दक्षिण-पूर्वी भाग पर विस्तृत है।

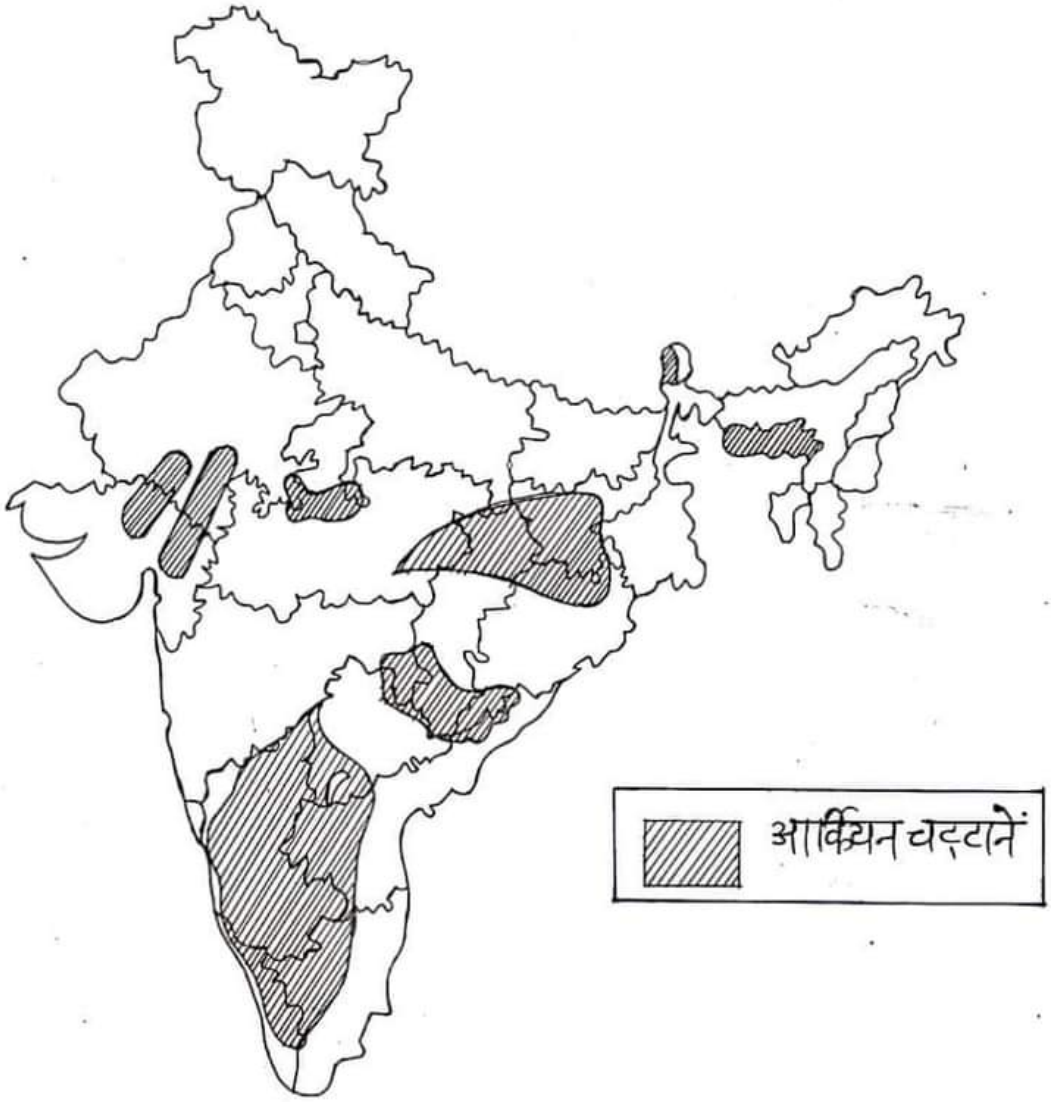

(ख). धारवाड़ क्रम की चट्टानें:-

→ ये आर्कियन क्रम की चट्टानों के अपरदन एवं निक्षेपण से निर्मित परतदार चट्टानें है, जो अत्यंत रूपान्तरित व विरूपित हो चुकी है।

→ ये प्रायद्वीपीय और बाह्य प्रायद्वीप दोनों ही भागों में पाई जाती है।

→ धारवाड़ क्रम की चट्टानों का जन्म कर्नाटक के धारवाड़, बेलारी व शिमोगा जिलों में हुआ।

→ यह चट्टानें अरावली श्रेणी, बालाघाट, रींवा, छोटा नागपुर आदि के अतिरिक्त लद्दाख, जास्कर व कुमायुँ पर्वत श्रेणियों और स्फीति घाटी के निकट शिखरों व गर्तों में पाई जाती है।

→ धारवाड़ क्रम की चट्टानों से ही देश की लगभग सभी धातुएँ-सोना, मैंगनीज, लोहा, ताँबा, टंगस्टन, क्रोमियम, जस्ता आदि प्राप्त होती है।

Scanned with CamScanner

(ग). कुडप्पा क्रम की चट्टानें:-

- धारवाड़ क्रम की चट्टानों के अपरदन एवं निक्षेपण के फलस्वरूप कुडप्पा क्रम की चट्टानों का निर्माण हुआ, जो अपेक्षाकृत कम रूपांतरित है तथा इनमें जीवाश्मों का अभाव पाया जाता है।
- ये चट्टानें मुख्यतः आंध्रप्रदेश, मध्यप्रदेश, छत्तिसगढ़, राजस्थान, तमिलनाडु और कर्नाटक में पाई जाती है।
- राजस्थान की कुडप्पा चट्टानों को दिल्ली श्रेणी के नाम से जाना जाता है।
- कुडप्पा क्रम की चट्टानों से बलुआ पत्थर, चूना-पत्थर, संगमरमर, एस्बेस्टस आदि की प्राप्ति होती है।

Scanned with CamScanner

(ध). विंध्यक्रम की चट्टानें :-

→ ये परतदार चट्टानें है, जिनका निर्माण समुद्र व नदी घाटियों में एकत्र हुये जल निक्षेपों द्वारा हुआ है।

→ विंध्यक्रम की चट्टानें राजस्थान के चित्तौड़गढ़ से लेकर बिहार के सासाराम तक 103600 वर्ग किमी. क्षेत्र में विस्तृत है, जो गंगा के मैदान और दक्कन के मध्य विभाजक रेखा के रूप में कार्य करती है।

→ विंध्यक्रम की चट्टानों से चूना पत्थर, बलुआ पत्थर, चीनी मिट्टी, अग्निप्रतिरोधक मिट्टी, वर्ण मिट्टी प्राप्त होती है, जिनमें से चूना-पत्थर, सीमेंट उद्योग का आधार है तथा बलुआ पत्थर दिल्ली के लाल किले, मध्यप्रदेश के साँची स्तूप, जामा-मस्जिद आदि के निर्माण में प्रयुक्त किया गया है।

(ङ). गोंडवाना क्रम की चट्टानें :-

→ गोंडवाना क्रम की चट्टानों का निर्माण अपरी कोर्बो-नीफेरस युग से जुरैसिक युग के मध्य हुआ है।

→ इनका विस्तार दामोदर नदी घाटी, महानदी घाटी, राजमहल, सतपुड़ा, महादेव पहाड़ी प्रदेशों, कश्मीर, दार्जिलिंग, सिक्किम तथा असम में पाया जाता है।

→ इन चट्टानों में मछलियों व रेंगने वाले जीवों के अवशेष पाये जाते है।

→ गोंडवाना क्रम की चट्टानों से ही भारत का 98% कोयला उत्पादित होता है।

Scanned with CamScanner

(च). दक्कन ट्रैप:-

→ क्रिस्टैशियस युग के अंत में प्रायद्वीप भारत के पश्चिमी भाग में व्यापक ज्वालामुखी क्रियाओं के फलस्वरूप बेसाल्ट लावा के प्रवाह से सीढ़ीदार भू-आकृतियों का निर्माण हुआ, जिनको 'दक्कन ट्रैप' कहा गया।

→ दक्कन ट्रैप का विस्तार महाराष्ट्र के अधिकांश भाग, गुजरात व दक्षिणी-पश्चिमी मध्यप्रदेश में मिलता है।

→ दक्कन ट्रैप चट्टानों के विखंडन से ही काली मृदा का निर्माण हुआ है, जिसे कपासी मृदा/रेगुर मृदा के नाम से भी जाना जाता है।

(छ:) टर्शियरी क्रम की चट्टानें :-

→ टर्शियरी क्रम की चट्टानों का निर्माण इयोसीन युग से लेकर प्लायोसीन युग के मध्य हुआ था।

→ टर्शियरी चट्टानों का विस्तार हिमालयी क्षेत्र के अन्तर्गत कश्मीर से लेकर कुमायुँ क्षेत्र में विकसित रूप में पाया जाता है, जिसे 'लिलांग' के नाम से जाना जाता है।

Scanned with CamScanner

#. उत्तर की विशाल पर्वतमाला:-

→ भारत के उत्तर में हिमालय की विशाल पर्वत शृंखला अवस्थित है, जो कि भारतीय उपमहाद्वीप की प्राकृतिक व राजनैतिक सीमा का निर्धारण करती है।

→ हिमालय नदियों को वर्षवाहिनी बनाये रखने में सहायक है, क्योंकि हिमालय में हिम पिघलने से नदियों में जल की आपूर्ति वर्षभर होती रहती है।

→ हिमालय के निर्माण के संबंध में कोबर का भू-सन्नति का सिद्धांत तथा हैरी हेस का प्लेट विवर्तनिकी सिद्धांत सबसे अधिक मान्य है।

→ कोबर नामक वैज्ञानिक ने भू-सन्नतियों को 'पर्वतों का पालना' कहा है।

→ हिमालय के क्षेत्र में आने वाले भूकंप, हिमालयी नदियों के निरंतर होते मार्ग परिवर्तन एवं परिपंजाल श्रेणी में 1500 से 1850 मीटर की ऊँचाई पर मिलने वाले झील निक्षेप हिमालय के उत्थान के जारी रहने के संकेत है।

#. उत्तर भारत का विशाल मैदानी भाग:-

→ यह नवीनतम भूखण्ड है, जो क्वार्टनरी या नियोजोइक महाकल्प के प्लीस्टोसीन एवं होलोसीन कल्प में टेथिस भू-सन्नति के निरंतर संकरा व छिछला होने एवं हिमालयी व दक्षिण भारतीय नदियों द्वारा लाये गये अवसादों के जमाव से निर्मित हुआ है।

→ उत्तर भारत के विशाल मैदानी भाग में प्राचीन वन प्रदेशों के दब जाने से कोयला तथा पेट्रोलियम के क्षेत्र मिलते है।

→ उत्तरी भारत के विशाल मैदानी भाग के पुराने जलोढ़ 'बांगर' तथा नये जलोढ़ 'खादर' के नाम से जाने जाते है।

→ उत्तरी भारत का विशाल मैदानीभाग वृहद जनसंख्या के जीवन का आधार है, क्योंकि इस मैदानी भाग की उपजाऊ जलोढ़ मृदा में कई प्रकार की फसलों का उत्पादन किया जाता है।

Scanned with CamScanner

* भारत के भू-आकृतिक प्रदेश :-

→ भारत में उच्चावच की दृष्टि से पाई जाने वाली अत्यधिक विविधता का क्रम निम्नप्रकार है - (अ). पर्वत (10.6%), (ब). पहाड़ियाँ (18.5%), (स) पठार (27.7%), और (द). मैदान (43.2%)

→ भू-आकृतिक आधार पर भारत देश को निम्नवत् पाँच भौतिक प्रदेशों में विभक्त किया गया है - (अ). हिमालय पर्वतीय प्रदेश,
(ब). उत्तर का विशाल मैदानी प्रदेश,
(स). प्रायद्वीपीय पठारी भाग,
(द). तटवर्ती मैदानी प्रदेश,
(य). द्वीपीय समूह

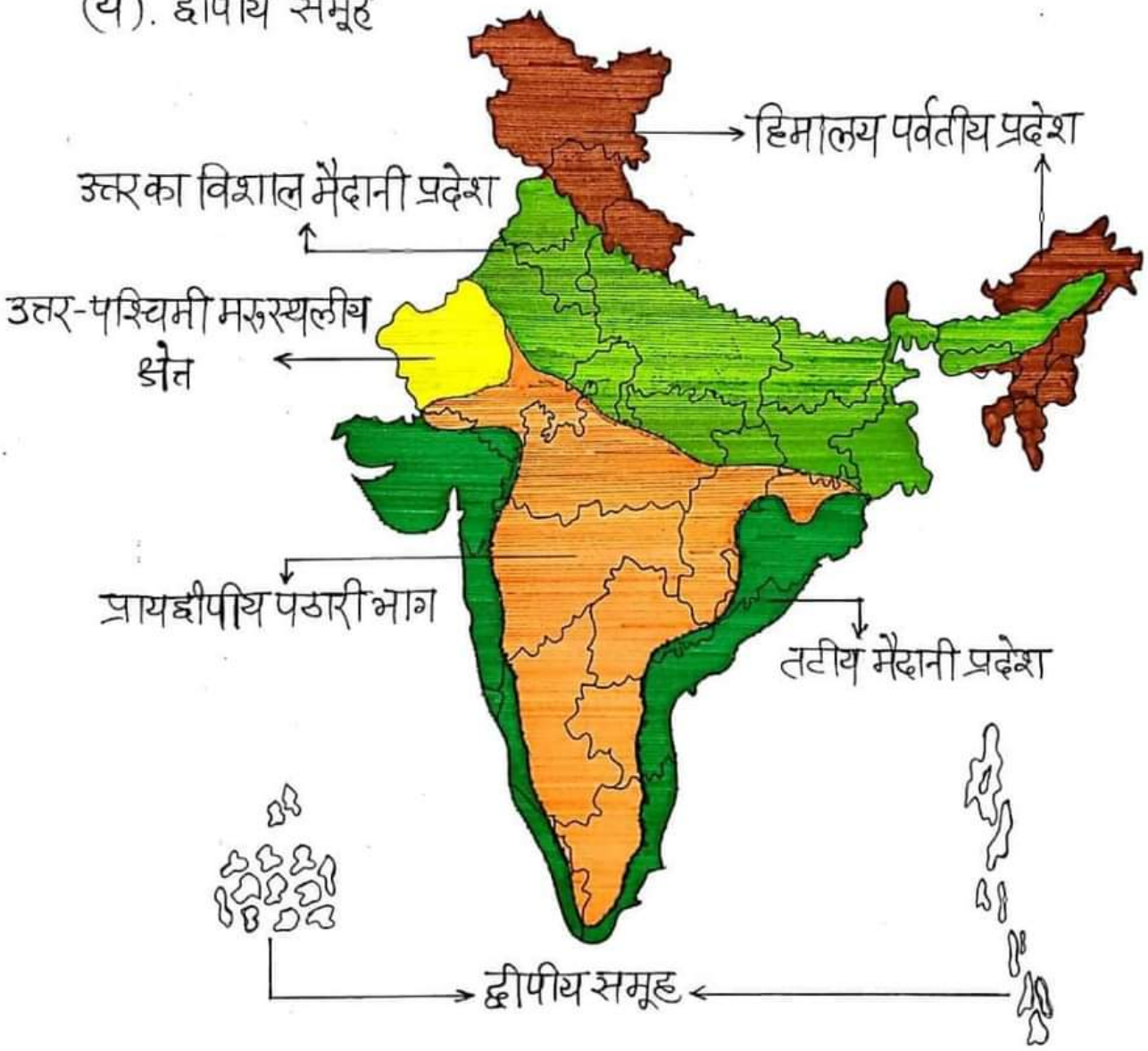

(अ). हिमालय पर्वतीय प्रदेश :-

→ इंडो-आस्ट्रेलियन प्लेट तथा यूरेशियन प्लेट के अभिसरण के द्वारा निर्मित वलित हिमालय पर्वत का एक भाग ही हिमालय पर्वतीय प्रदेश है।

Scanned with CamScanner

→ हिमालय की सभी श्रृंखलाओं का निर्माण अल्पाइन भूसंचलन के तहत टर्शियरी युग में टेथिस युग में टेथिस भूसन्नति (सागर) में अवसादों के जमाव के फलस्वरूप हुआ है। अतः टेथिस सागर को 'हिमालय का गर्भगृह या जन्मस्थल' कहा जा सकता है।

→ भारत की उत्तरी सीमा पर विश्व की सबसे ऊँची एवं पूर्व से पश्चिम में विस्तृत हिमालय सबसे बड़ी पर्वतमाला है, जो कि विश्व की नवीनतम मोड़दार पर्वत-श्रेणी है।

→ हिमालय पर्वत श्रेणी के पश्चिमी भाग में नंगा पर्वत के निकट एवं पूर्वी भाग में नामचा बरवा के निकट दो तीखे अक्षसंधीय मोड़, 'हेयरपिन टर्न' की भाँति मिलते हैं, जिनका निर्माण प्रायद्वीपीय पठारी भाग के उत्तर-पूर्वी दबाव के कारण हुआ।

→ हिमालय की पर्वत श्रेणियाँ प्रायद्वीपीय पठार की ओर उत्तल एवं तिब्बत की ओर अवतल हो गई है तथा हिमालय की पश्चिम से पूर्व की ओर चौड़ाई कम होती जाती है, किन्तु ऊँचाई बढ़ती जाती है और ढाल भी तीव्र होता जाता है।

→ हिमालय पर्वत श्रृंखला कश्मीर से अरुणाचल प्रदेश तक 2500 किमी. में फैली हुई है तथा इसकी पूर्व में चौड़ाई 150 किमी. और पश्चिम में चौड़ाई 500 किमी. तक है तथा हिमालय पर्वत श्रृंखला की औसत ऊँचाई 6000 मीटर है।

→ टर्शियरी युग में निर्मित होने के कारण नवीन वलित हिमालय पर्वत में अपरदन की क्रिया कम होती है तथा इसकी ऊँचाई अधिक होने के कारण इसके ऊपर पाये जाने वाले हिमनदों से भारत की प्रमुख नदियों का उद्गम होता है।

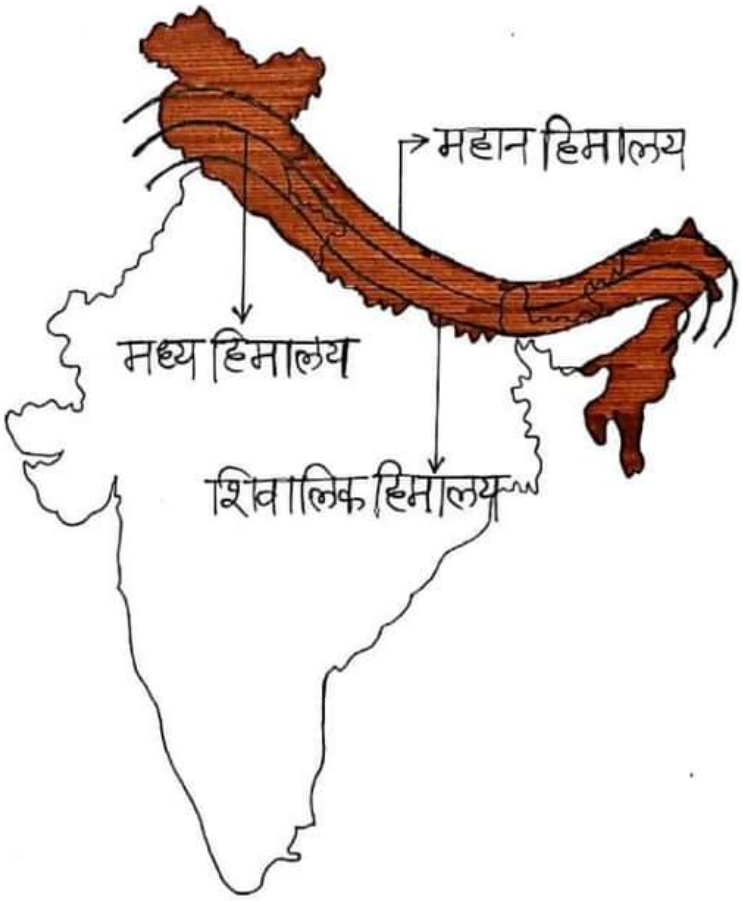

Scanned with CamScanner

→ हिमालय पर्वतीय प्रदेश 05,48,000 वर्ग किमी. क्षेत्र में विस्तृत है, जिसको निम्न तीन भागों में विभक्त किया जाता है-

(अ). ट्रॉंस हिमालय, (ब). मुख्य हिमालय, (स). पूर्वांचल हिमालय

(अ). ट्रॉंस हिमालय:-

→ ट्रॉंस हिमालय, हिमालय पर्वतीय प्रदेश का सबसे उत्तरी भाग है, जो मुख्य रूप से भारत के जम्मू-कश्मीर तथा तिब्बत में विस्तृत है।

→ ट्रॉंस हिमालय, मुख्य हिमालय की दृष्टि क्षेत्र में स्थित होने के कारण इसमें शुष्क परिस्थितियाँ पाई जाती है।

→ ट्रॉंस हिमालय उत्तर में महान हिमालय से इंडो-सांग्पो-शचर जोन या हिंजलाइन के द्वारा अलग होता है।

→ ट्रॉंस हिमालय में स्थित पर्वत श्रेणियाँ:-

Ⓐ. कराकोरम पर्वत श्रेणी:-

→ ट्रॉंस हिमालय के सबसे उत्तरी भाग में स्थित सबसे लंबी व ऊँची कराकोरम पर्वत श्रेणी भारतीय भूभाग के पाक अधिकृत कश्मीर में अवस्थित है।

→ कराकोरम पर्वत श्रेणी में भारत की सर्वोच्च तथा विश्व की दूसरी सर्वोच्च पर्वतचोटी के-2 या गॉडविन ऑस्टिन है, जिसकी ऊँचाई 8611 मीटर है।

→ कराकोरम पर्वत श्रेणी में सियाचिन हिमनद, हिस्पर हिमनद, बालतोरो हिमनद, बत्तूरा हिमनद, बियाफो हिमनद आदि अवस्थित है, जिनमें से सियाचिन हिमनद (76 किमी.) सबसे बड़ा हिमनद है।

→ कराकोरम पर्वत श्रेणी में सिन्धु नदी की सहायक नुब्रा नदी की घाटी में सियाचिन हिमनद स्थित है।

→ कराकोरम पर्वत श्रेणी को "उच्च एशिया की रीढ़" के रूप में जाना जाता है।

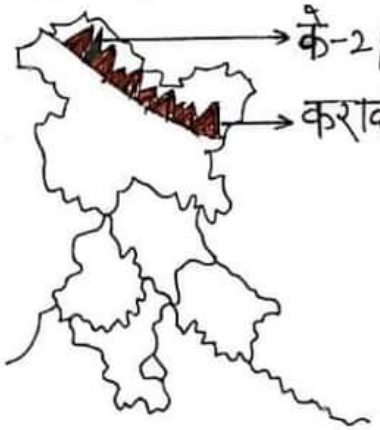

Ⓑ. लद्दाख पर्वत श्रेणी:-

→ ट्रॉंस हिमालय की मध्य पर्वत श्रेणी लद्दाख के पूर्वी भाग को तिब्बत में कैलाश पर्वत के नाम से जाना जाता है।

Scanned with CamScanner

→ तिब्बत में कैलाश पर्वत के दक्षिण में मानसरोवर झील अवस्थित है।
→ लद्दाख पर्वत श्रेणी की सबसे ऊँची पर्वत चोटी- राकापोशी है, जो कि विश्व की सबसे अधिक तीव्र ढाल वाली पर्वत चोटी है।
→ लद्दाख पर्वत श्रेणी तथा कराकोरम पर्वत श्रेणी के मध्य भारत का सर्वोच्च पठार- लद्दाख पठार अवस्थित है, जो कि अंत: पर्वतीय पठार है।
→ भारत का सबसे ठण्डा मरुस्थल- लद्दाख मरुस्थल है, जहाँ सबसे न्यूनतम वर्षा होती है।

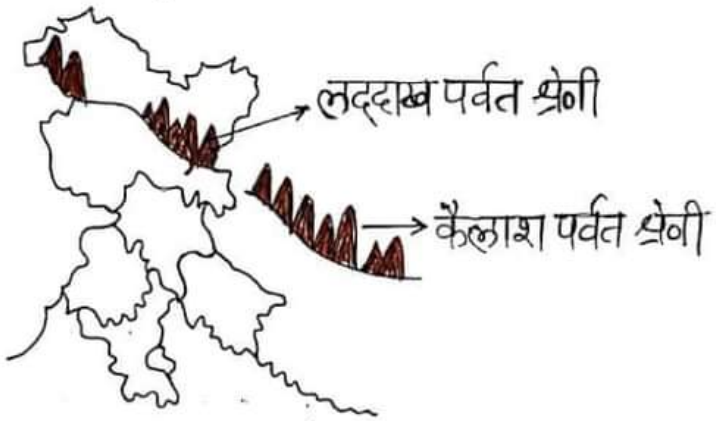

©. जास्कर पर्वत श्रेणी:-

→ जास्कर पर्वत श्रेणी, ट्रांस हिमालय की सबसे दक्षिणतम पर्वत श्रेणी है।
→ जास्कर पर्वत श्रेणी तथा लद्दाख पर्वत श्रेणी के मध्य सिन्धु नदी प्रवाहित होती है, जो बुंजी नामक स्थान पर लद्दाख श्रेणी को काटकर भारत के सबसे गहरे गॉर्ज (5200 मीटर) का निर्माण करती है।

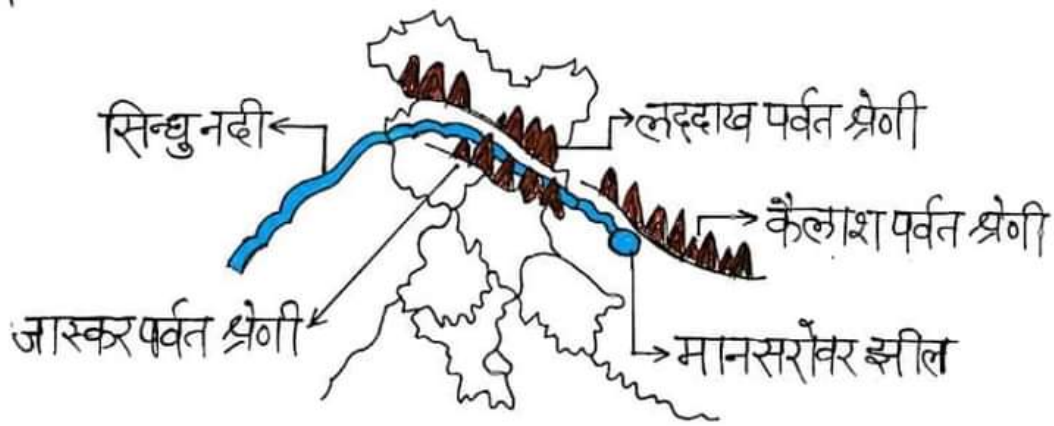

(ब). मुख्य हिमालय:-

→ हिमालय पर्वतीय प्रदेश का यह भाग सिन्धु नदी घाटी से ब्रह्मपुत्र नदी घाटी तक विस्तृत है।
→ मुख्य हिमालय के क्लय की प्रकृति असममित है, जो मुख्यत: खेदार आग्नेय अथवा कायान्तरित शिलाओं से निर्मित है।
→ मुख्य हिमालय अपने दोनों ओर अक्षसंधीय मोड़/ हेयरपिन मोड़/ सिंटेक्सिल मोड़ का निर्माण करता है।

Scanned with CamScanner

→ मुख्य हिमालय का ढाल उत्तर की ओर मन्द है, किन्तु दक्षिण की ओर तीव्र है।
→ मुख्य हिमालय को निम्नवत् तीन श्रेणियों में विभक्त किया गया है -

Ⓐ. हिमाद्री / आन्तरिक हिमालय :-

→ यह मुख्य हिमालय की सबसे उत्तरी श्रेणी है, जिसकी पश्चिम में चौड़ाई 400 किमी. है तथा पूर्व में चौड़ाई 150 किमी. है तथा इस पर्वत श्रेणी की औसत ऊँचाई 6100 मीटर है।
→ हिमाद्री पर्वत श्रेणी में बहुत सारे हिमनद जैसे - गंगोत्री, यमुनोत्री, पिण्डारी, मिलान, सतोपथ आदि पाये जाते है।
→ हिमाद्री पर्वत श्रेणी में ही विश्व की सर्वोच्च पर्वत चोटी - माउण्ट एवरेस्ट (8848 मीटर) है, जो कि नेपाल में अवस्थित है।
* माउण्ट एवरेस्ट को तिब्बती भाषा में "चोमोलुंग्मा" के नाम से जाना जाता है तथा इस पर्वत शिखर को नेपाल में "सागरमाथा" भी कहा जाता है।
→ हिमाद्री पर्वत श्रेणी में माउण्ट एवरेस्ट के अतिरिक्त कंचनजंघा (8598 मी.), मकालू (8481 मी.), नंगा पर्वत (8126 मी.), नंदा देवी पर्वत (7816 मी.) जैसे उच्च पर्वत शिखर अवस्थित है।
→ हिमालय पर्वत के प्रमुख हिमनद :-

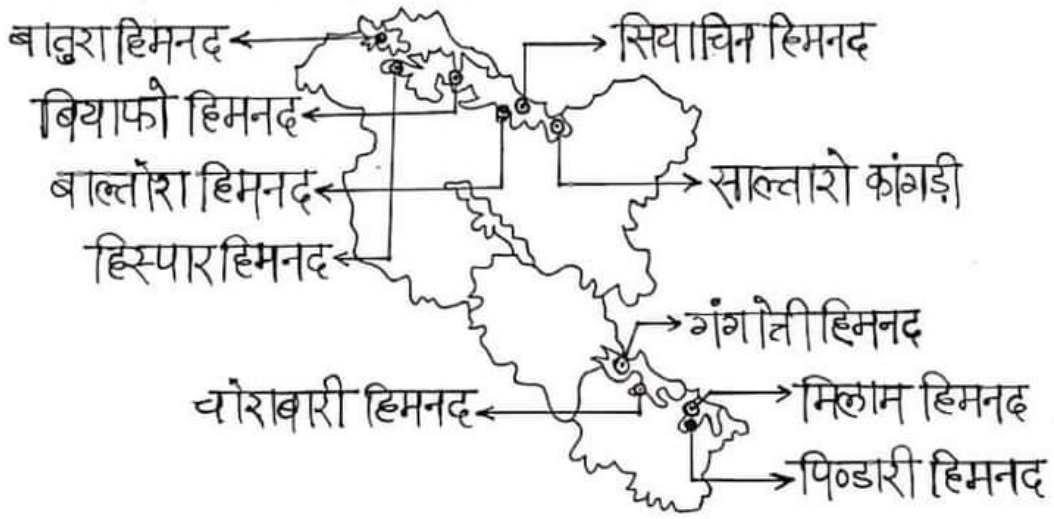

Ⓑ. मध्य हिमालय :-

→ यह महान हिमालय के दक्षिण में लगभग उसके समानांतर पूर्व से पश्चिम दिशा में विस्तृत है तथा इसकी चौड़ाई 60-80 किमी. और ऊँचाई 3500 - 4500 मीटर तक है।
→ यह हिमालय की सबसे कटी-छटी पर्वत श्रृंखला है, जिसमें पीरपंजाल, धौलाधर, नागटिब्बा व महाभारत हिमालय जैसी पर्वत श्रेणियाँ अवस्थित है।
→ मध्य हिमालय में ग्रीष्म ऋतु में बर्फ के थोड़ा पिघलने के कारण यहाँ पाये जाने वाले शीतोष्ण कटिबंधीय घास के मैदानों को जम्मू-कश्मीर की स्थानीय भाषा में 'मर्ग' तथा उत्तराखंड में 'बुग्याल व पयार' के नाम से जाना जाता है, जिनका उपयोग स्थानीय समुदाय द्वारा पशुचारण के लिए किया जाता है।

Scanned with CamScanner

* हिमालय का प्रादेशिक विभाजन :-

(अ). कश्मीर/पंजाब हिमालय :-

→ सिन्धु व सतलज नदी के मध्य 560 किमी. लम्बाई में विस्तृत हिमालयी भाग को कश्मीर/पंजाब हिमालय के नाम से जाना जाता है।

→ इस हिमालयी भाग के अंतर्गत ही जास्कर, लद्दाख, करकोरम, पीरपंजाल, धौलाधर जैसी पर्वत श्रेणियाँ अवस्थित है।

→ इस हिमालयी भाग में मीठे पानी की झीलें- वूलर, डल आदि तथा खारें पानी की झीलें- पांगोंग त्सो, त्सो मोरिरी आदि पाई जाती है।

→ कश्मीर/पंजाब हिमालय, करेवा झीलीय निक्षेपों के लिए प्रसिद्ध है, जहाँ जाफरान की खेती होती है।

(ब). कुमायुँ हिमालय :-

→ यह सतलज तथा काली नदी के बीच 320 किमी. लंबा पर्वतीय क्षेत्र है, जिसके पश्चिमी भाग को 'गढ़वाल हिमालय' तथा पूर्वी भाग को 'कुमायुँ हिमालय' के नाम से जाना जाता है।

→ इस हिमालयी भाग में बद्रीनाथ, केदारनाथ, त्रिशूल, गंगोत्री, नंदा देवी, कामेत आदि प्रमुख चोटियाँ है तथा इसी भाग में ही माना दर्रा व नीती दर्रा भी अवस्थित है।

→ इस हिमालयी भाग में गंगा व यमुना नदियों के उद्गम स्थल क्रमशः गंगोत्री व यमुनोत्री अवस्थित है तथा इस भाग में ही नैनीताल, भूमिताल, सातताल आदि झीलें है, जो भारत के उत्तराखण्ड राज्य में स्थित है।

(स). नेपाल हिमालय :-

→ यह काली नदी तथा तिस्ता नदी के मध्य 800 किमी. में विस्तृत नेपाल हिमालय में हिमालय की चौड़ाई अत्यधिक कम तथा ऊँचाई सबसे अधिक पाई जाती है।

→ नेपाल हिमालय में हिमालय पर्वत श्रृंखला के कई सारे ऊँचे-ऊँचे पर्वत शिखर अवस्थित है। जैसे :- माउण्ट एवरेस्ट (8848 मी.), कंचनजंगा (8598 मी.), मकालू (8481 मी.), धौलागिरि (8172 मी.), अन्नपूर्णा (8073 मी.), गोसाईथान (8013 मी.) आदि।

→ नेपाल हिमालय में स्थित 'माउण्ट एवरेस्ट' पर्वत चोटी विश्व की सबसे ऊँची पर्वत चोटी है।

Scanned with CamScanner

(द) असम हिमालय :-

→ यह तिस्ता नदी से लेकर ब्रह्मपुत्र नदी तक 750 किमी. की लम्बाई में विस्तृत है, जो कि नेपाल हिमालय की अपेक्षा कम ऊँचा है।

→ इस हिमालयी भाग में हिमालय पर्वतमाला की सबसे पूर्वी चोटी - नामचा बास्वा (7756m है, जो कि अरुणाचल प्रदेश व तिब्बत की सीमा पर अवस्थित है।

→ इस हिमालयी भाग की प्रमुख नदियाँ - दिबांग, दिहंग, लोहित व ब्रह्मपुत्र है तथा इस भाग में जेलेप्ला, बोमडिला, यांग्याप, कार्पोला आदि दर्रे भी स्थित है।

भारत में स्थित प्रमुख दर्रे :-

(अ). जम्मू-कश्मीर में स्थित दर्रे :-

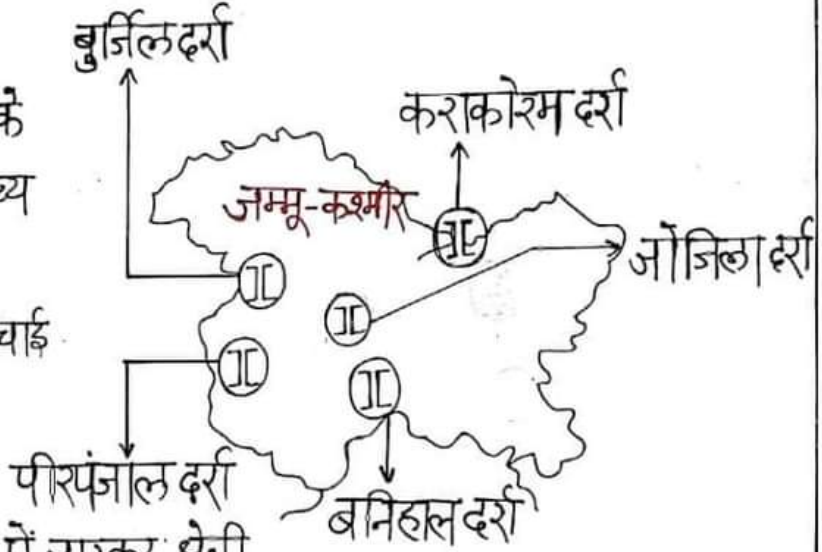

(A). करकोरम दर्रा :- यह दर्रा जम्मू-कश्मीर के लद्दाख क्षेत्र में करकोरम पहाड़ियों के मध्य स्थित है।

→ यह भारत का सबसे ऊँचा दर्रा है, जिसकी ऊँचाई 5540 मीटर है।

(B). जोजिला दर्रा :- यह दर्रा जम्मू-कश्मीर में जास्कर श्रेणी में स्थित है तथा इस दर्रे से श्रीनगर से लेह का मार्ग गुजरता है।

→ जोजिला दर्रे से ही राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या-1D गुजरता है।

(C). बुर्जिल दर्रा :- यह दर्रा श्रीनगर को गिलगिट से जोड़ता है तथा इस दर्रे की समुद्रतल से ऊँचाई 4100 मीटर से भी अधिक है।

(D). पीरपंजाल दर्रा :- यह दर्रा जम्मू-कश्मीर के दक्षिण-पश्चिम में स्थित है तथा यह दर्रा जम्मू को श्रीनगर से जोड़ता है।

(E). बनिहाल दर्रा :- श्रीनगर को जम्मू से जोड़ने वाले बनिहाल दर्रे से राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या-1A गुजरता है तथा इस दर्रे में ही जवाहर सुरंग अवस्थित है।

Scanned with CamScanner

(ब). हिमाचल प्रदेश में स्थित दर्रे:-

Ⓐ. शिपकिला दर्रा:- यह हिमाचल प्रदेश में जास्कर पर्वत श्रेणी में स्थित है।

➔ यह दर्रा शिमला (हिमाचल प्रदेश) को तिब्बत से जोड़ता है।

➔ तिब्बत से आने वाली सतलज नदी, शिपकिला दर्रे से ही भारत में प्रवेश करती है।

Ⓑ. रोहतांग दर्रा:- यह दर्रा हिमाचल प्रदेश की पीरपंजाल श्रेणी में समुद्रतल से 3979 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है।

➔ इस दर्रे को 'लाशों का देर' के नाम से भी जाना जाता है तथा यह दर्रा मनाली को लेह से सड़क मार्ग से जोड़ता है।

➔ रोहतांग दर्रे को हिमाचल प्रदेश के लाहौल-स्पीति जिले के प्रवेश द्वार के रूप में भी जाना जाता है।

(स). उत्तराखंड में स्थित दर्रे:-

Ⓐ. माना दर्रा:- महान हिमालय की कुमायुँ पहाड़ियों (उत्तराखंड) में समुद्रतल से लगभग 5611 मीटर की ऊँचाई पर स्थित माना दर्रा, उत्तराखंड को तिब्बत से जोड़ता है।

Ⓑ. नीति दर्रा:- यह दर्रा उत्तराखंड में कुमायुँ पहाड़ियों में 5068 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है तथा यह दर्रा भी उत्तराखंड को तिब्बत से जोड़ता है।

Ⓒ. लिपुलेक दर्रा:- उत्तराखंड को तिब्बत से जोड़ने वाले लिपुलेक दर्रे के माध्यम से कैलाश-मानसरोवर की यात्रा किये जाने के कारण लिपुलेक दर्रे को 'मानसरोवर का प्रवेश द्वार' भी कहा जाता है।

(द) उत्तर-पूर्वी भारत में स्थित प्रमुख दर्रे:-

Ⓐ. नाथुला दर्रा:- यह दर्रा भारत के सिक्किम राज्य की डोगेम्या श्रेणी में समुद्रतल से 4310 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है तथा यह दर्रा प्राचीन रेशम मार्ग की एक शाखा है।

Scanned with CamScanner

Ⓑ जेलेप्ला दर्रा:-

→ यह दर्रा सिक्किम में स्थित है, जो दार्जिलिंग व चुम्बी घाटी से होकर तिब्बत जाने का मार्ग है।

Ⓒ. बोमाडिला दर्रा:- यह दर्रा अरुणाचल प्रदेश राज्य के उत्तर-पश्चिम भाग में स्थित है तथा यह दर्रा अरुणाचल प्रदेश को तिब्बत की राजधानी-ल्हासा से जोड़ता है।

Ⓓ. यांग्याप दर्रा:- यह दर्रा भारत के अरुणाचल प्रदेश के उत्तर-पूर्व में स्थित है तथा इस दर्रे के नजदीक से ब्रह्मपुत्र नदी, भारत में प्रवेश करती है।

Ⓔ. पांगसउ दर्रा:- यह दर्रा समुद्रतल से 1136 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है तथा यह दर्रा अरुणाचल प्रदेश को मांडले (म्यांमार) से जोड़ता है।

Ⓕ. दिफू दर्रा:- यह दर्रा अरुणाचल प्रदेश के पूर्व में म्यांमार की सीमा पर स्थित है तथा यह भारत एवं म्यांमार के बीच का एक परम्परागत दर्रा है, जो व्यापार व परिवहन हेतु वर्षभर खुला रहता है।

Ⓖ. तुजु दर्रा:- यह मणिपुर राज्य के दक्षिण-पूर्व में स्थित है तथा इस दर्रे से इम्फाल से तामू व म्यांमार जाने का मार्ग गुजरता है।

(ब) उत्तर का विशाल मैदानी भाग:-

→ उत्तरी पर्वतीय भाग हिमालय पर्वत श्रृंखला के दक्षिण एवं प्रायद्वीपीय पठार के उत्तर में विशाल समतल भूभाग है, जो कि गंगा, सिंधु एवं ब्रह्मपुत्र और उनकी सहायक नदियों के द्वारा लाये गये जलोढ़ निक्षेपों से निर्मित मैदानी भाग है। इसलिए इसे सिन्धु-गंगा-ब्रह्मपुत्र का मैदान भी कहते है।

→ इस मैदानी भाग का विस्तार 7.5 लाख वर्ग किमी. क्षेत्र पर है तथा इस मैदान की पूर्व-पश्चिम लम्बाई 3200 किमी. और औसत चौड़ाई 150 से 300 किमी. है।

Scanned with CamScanner

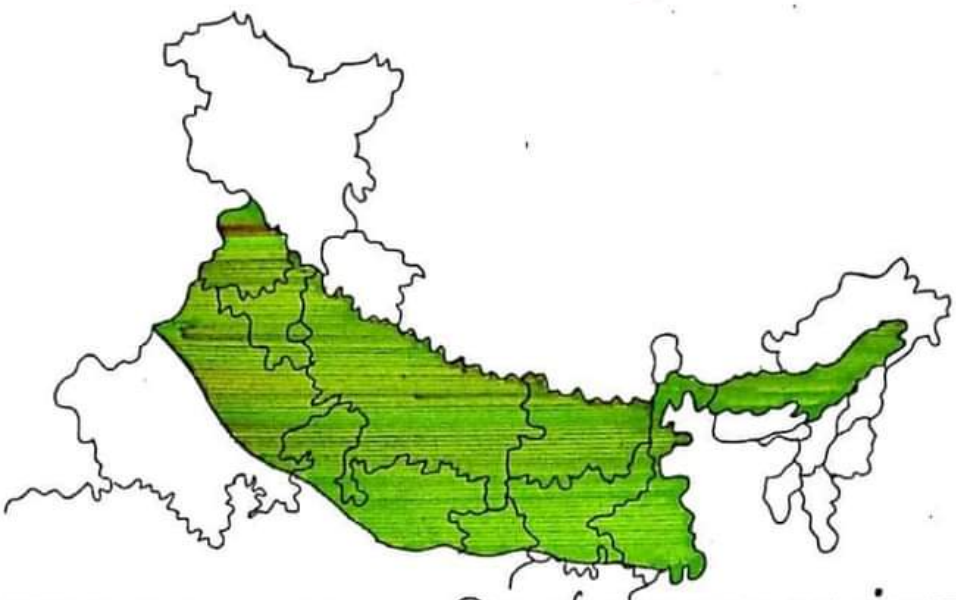

➔ यह मैदानी भाग समृद्ध मृदा आवरण, जल की पर्याप्त उपलब्धता एवं अनुकूल जलवायु के कारण कृषि की दृष्टि से भारत का अत्यधिक उपजाऊ क्षेत्र है और सघन जनसंख्या वाला भौगोलिक प्रदेश है।

➔ इस विशाल मैदानी भाग के अंतर्गत पश्चिमी मैदान का ढ़ाल उत्तर-पूर्व से दक्षिण-पश्चिम की ओर तथा पूर्वी मैदान का ढ़ाल उत्तर-पश्चिम से दक्षिण-पूर्व की ओर है।

➔ उत्तर के विशाल मैदानी भाग को निम्न भागों में विभक्त किया जाता है-

Ⓐ. राजस्थान के मैदान :-

➔ अरावली पर्वतमाला के पश्चिम में स्थित राजस्थान के मैदान में शुष्क तथा अर्द्ध-शुष्क परिस्थितियाँ पाई जाती है।

➔ राजस्थान के इस मैदानी प्रदेश की मुख्य नदी- लूनी नदी है तथा इस मैदानी प्रदेश में पचपदरा, लूणकरनसर जैसी बहुत-सी लवणीय झीलें पाई जाती है।

Ⓑ. सतलज के मैदान :-

➔ सतलज, रावी तथा व्यास नदियों के द्वारा निर्मित सतलज का मैदान मुख्यतः पंजाब तथा हरियाणा राज्य में विस्तृत है।

➔ सतलज के मैदान का ढाल उत्तर-पूर्व से दक्षिण-पश्चिम दिशा की ओर स्थित है।

➔ सतलज के मैदानी क्षेत्र में कई प्रमुख दोआब पाये जाते है, जैसे- बारी (व्यास-रावी), बिस्त (सतलज-व्यास)

➔ सतलज के मैदान के अत्यधिक उपजाऊ होने के कारण यहाँ सबसे अधिक उत्पादकता पाई जाती है।

Scanned with CamScanner

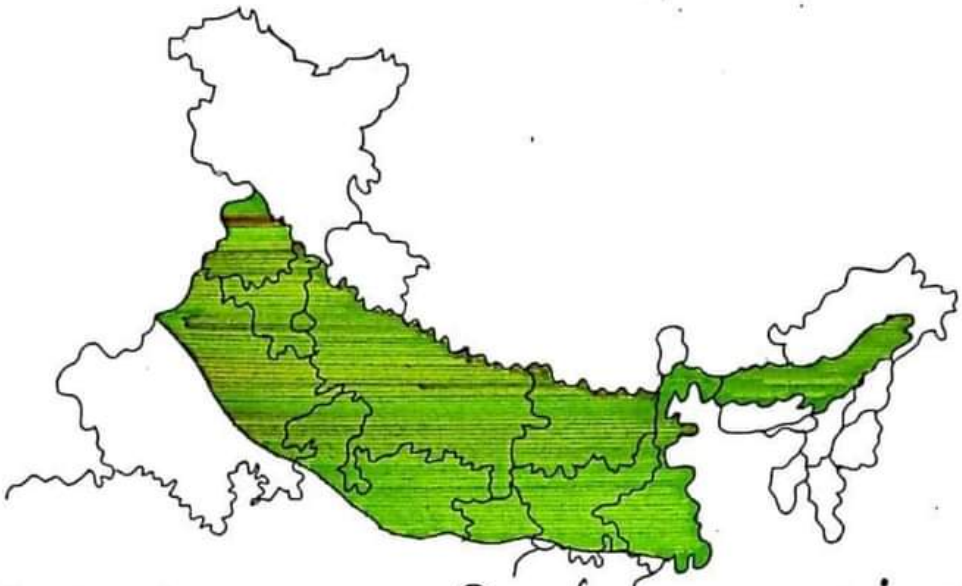

➤ यह मैदानी भाग समृद्ध मृदा आवरण, जल की पर्याप्त उपलब्धता एवं अनुकूल जलवायु के कारण कृषि की दृष्टि से भारत का अत्यधिक उपजाऊ क्षेत्र है और सघन जनसंख्या वाला भौगोलिक प्रदेश है।

➤ इस विशाल मैदानी भाग के अंतर्गत पश्चिमी मैदान का ढाल उत्तर-पूर्व से दक्षिण-पश्चिम की ओर तथा पूर्वी मैदान का ढाल उत्तर-पश्चिम से दक्षिण-पूर्व की ओर है।

➤ उत्तर के विशाल मैदानी भाग को निम्न भागों में विभक्त किया जाता है-

Ⓐ. राजस्थान के मैदान :-

➤ अरावली पर्वतमाला के पश्चिम में स्थित राजस्थान के मैदान में शुष्क तथा अर्द्ध-शुष्क परिस्थितियाँ पाई जाती है।

➤ राजस्थान के इस मैदानी प्रदेश की मुख्य नदी- लूनी नदी है तथा इस मैदानी प्रदेश में पचपदरा, लूणकरनसर जैसी बहुत-सी लवणीय झीलें पाई जाती है।

Ⓑ. सतलज के मैदान :-

➤ सतलज, रावी तथा व्यास नदियों के द्वारा निर्मित सतलज का मैदान मुख्यतः पंजाब तथा हरियाणा राज्य में विस्तृत है।

➤ सतलज के मैदान का ढाल उत्तर-पूर्व से दक्षिण-पश्चिम दिशा की ओर स्थित है।

➤ सतलज के मैदानी क्षेत्र में कई प्रमुख दोआब पाये जाते है, जैसे- बारी (व्यास-रावी), बिस्त (सतलज-व्यास)

➤ सतलज के मैदान के अत्यधिक उपजाऊ होने के कारण यहाँ सबसे अधिक उत्पादकता पाई जाती है।

Scanned with CamScanner

© गंगा के मैदान:-

→ यमुना नदी से लेकर पूर्व में बांग्लादेश की पश्चिमी सीमा तक विस्तृत मैदानी भाग गंगा का मैदान कहलाता है, जिसका विस्तार लगभग 1400 किलोमीटर है।

→ गंगा के मैदान का ढाल उत्तर-पश्चिम से दक्षिण-पूर्व की ओर स्थित है।

→ गंगा के मैदानी क्षेत्र में सबसे अधिक उत्पादन पाया जाता है तथा सबसे अधिक जनघनत्व भी इस मैदानी क्षेत्र में पाया जाता है।

→ गंगा के मैदानी प्रदेश को विभिन्न प्रादेशिक नाम से जाना जाता है, जो निम्नवत है-

(i) दिल्ली के पूर्व में - रोहिलखण्ड के मैदान, (ii) लखनऊ के निकट - अवध के मैदान

(iii) बिहार में गंगा नदी के उत्तर में - मिथिला के मैदान, (iv) बिहार में गंगा के दक्षिण में - मगध के मैदान

(v) कोसी तथा महानन्दा नदियों के मध्य - बारिन्द के मैदान

(D) ब्रह्मपुत्र के मैदान:-

→ यह मैदानी क्षेत्र मुख्यत: उत्तर-पूर्वी राज्यों में विस्तृत है, जिसका निर्माण ब्रह्मपुत्र व उसकी सहायक नदियों के द्वारा किया गया है।

→ इस भाग का ढाल उत्तर-पूर्व से दक्षिण-पूर्व की ओर है तथा इस मैदान का उपयोग चावल तथा पटसन की खेती के लिए किया जाता है।

→ इस मैदानी भाग में विश्व का सबसे बड़ा नदीय द्वीप - माजुलीद्वीप स्थित है, जिसका निर्माण ब्रह्मपुत्र नदी के द्वारा किया जाता है।

* भौतिक आकृतियों की भिन्नता के आधार पर उत्तरी मैदानी भाग का विभाजन:-

(अ). भाबर के मैदान:- उत्तर भारत में शिवालिक हिमालय के समानान्तर विस्तृत 8 से 15 किमी. चौड़े मैदान भाबर के मैदान कहलाते है।

→ इस मैदानी क्षेत्र में नदी बड़े अवसादों के नीचे बहने के कारण नदी सतह पर अदृश्य हो जाती है।

→ भाबर के मैदान कृषि की दृष्टि से अनुपयोगी होते है।

(ब). तराई के मैदान:- भाबर के मैदानी क्षेत्र से दक्षिण में 15 से 30 किमी. की दूरी में विस्तृत तराई के मैदानों

Scanned with CamScanner

में नदी पुनः सतह पर आकर अनियमित रूप से प्रवाहित है तथा इन मैदानों में दलदली परिस्थितियों में गहन वनस्पति व वन्यजीव पाये जाते है।

➔ पंजाब तथा उत्तरप्रदेश में तराई के मैदान का प्रयोग गेहूँ तथा गन्ने की खेती के लिए किया जाता है।

➔ वर्तमान समय में तराई प्रदेश मुख्यतः पूर्वी भागों में पाया जाता है।

(स). बांगर के मैदान:-

➔ यह खादर के मैदान के दोनों ओर पाये जाने वाले पुराने अवसादों से निर्मित क्षेत्र है, जो कि खादर के मैदान से थोड़ा ऊँचाई पर अवस्थित है।

➔ इस मैदानी क्षेत्र में कैल्शियम के पिण्ड पाये जाते है, जिन्हें 'केकर' कहा जाता है।

➔ अपरद्रव से ऊपर की मुलायम परत के विस्थापित हो जाने के बाद पीछे रह जाने वाली पथरीली भूमि, भूड़ कहलाती है, जो गंगा तथा रामगंगा नदी के प्रवाह क्षेत्र में पायी जाती है।

(द) खादर के मैदान:- नदी के दोनों ओर बाढ़ के मैदानों में पाये जाने वाले नये अवसादों से निर्मित खादर के मैदान नदी द्वारा प्रतिवर्ष मानसून के दौरान नये अवसादों से बनाये जाते है, जो कि अत्यधिक उपजाऊ मैदान है।

➔ पंजाब में नदी के दोनों ओर स्थित खादर के मैदान को 'बेट' के नाम से जाना जाता है।

* भारत का मरुस्थलीय भाग:-

➔ देश के राजस्थान राज्य के पश्चिमी भाग में एक शुष्क प्रदेश अवस्थित है, जिसे 'विशाल भारतीय मरुस्थल/राजस्थान का मरुस्थल/थार का मरुस्थल' कहा जाता है, जो कि लगभग 01,+5,000 वर्ग किमी. क्षेत्र पर विस्तृत है।

➔ थार का मरुस्थल अरावली पहाड़ियों के उत्तर-पश्चिमी भाग में स्थित है, जो कि बालू के टिल्लों से ढका एक तरंगित मैदान है, जहाँ 15 सेमी. से भी कम वार्षिक वर्षा होती है।

➔ इस मरुस्थलीय भाग की सबसे लम्बी नदी-लूनी नदी है, जो कि भारत में अंतस्थलीय प्रवाह की सबसे लम्बी नदी है।

➔ लूनी नदी अर्द्धशुष्क मरुस्थलीय प्रदेश से प्रवाहित होती हुई कच्छ के रण के दलदली क्षेत्र में विलुप्त हो जाती है।

Scanned with CamScanner

(स). प्रायद्वीपीय पठारी भाग:-

→ प्रायद्वीपीय पठार एक मेज की आकृति वाला भूभाग है, जो पुराने क्रिस्टलीय, आग्नेय तथा रूपान्तरित शैलों से निर्मित है तथा यह प्राचीन गोंडवानालैण्ड का अंग है।

→ दक्षिण भारत का पठार / प्रायद्वीपीय पठार आकृति की दृष्टि से अनियमित त्रिभुजाकार है तथा यह उत्तर की ओर चौड़ा और दक्षिण की ओर संकीर्ण है।

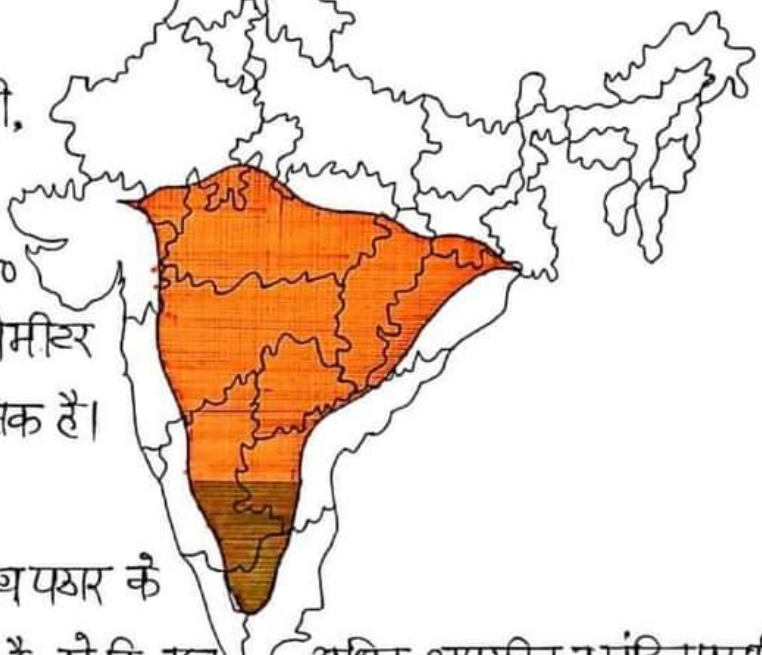

→ प्रायद्वीपीय पठार की उत्तरी सीमा पर अरावली, विंध्याचल और सतपुड़ा की पहाड़ियाँ स्थित हैं।

→ प्रायद्वीपीय पठार का उत्तर से दक्षिण विस्तार 1600 किमी. और पूर्व से पश्चिम विस्तार 1400 किलोमीटर है तथा इसकी औसत ऊँचाई 500 से 750 मीटर तक है।

* **अरावली श्रेणी**:- अरावली की पहाड़ियाँ, प्रायद्वीपीय पठार के पश्चिमी तथा उत्तर-पश्चिमी भाग में अवस्थित है, जो कि बहुत अधिक अपरदित व खंडित पहाड़ियाँ हैं।

→ अरावली की पहाड़ियाँ, दक्षिण-पश्चिम में गुजरात से लेकर उत्तर-पूर्व में दिल्ली तक विस्तृत हैं।

→ अरावली पर्वतमाला, विश्व की सबसे प्राचीन पर्वत श्रृंखलाओं में से एक है।

→ अरावली पर्वत श्रृंखला की कुल लम्बाई 692 किमी. है, जिसका अधिकतम भाग (550 किमी.) राजस्थान राज्य में विस्तृत है।

→ अरावली पर्वत श्रृंखला की औसत ऊँचाई 930 मीटर है तथा इसकी सर्वोच्च पर्वत-चोटी 'गुरुशिखर' (1722 मी.) है, जो कि राजस्थान राज्य के सिरोही जिले में अवस्थित है।

→ यह राजस्थान में जल विभाजक के रूप विख्यात है तथा इस पर्वतीय क्षेत्र में बहुत से खनिज-सीसा, जस्ता, चाँदी, लौह अयस्क आदि पाये जाते हैं।

* **विंध्याचल पर्वत श्रेणी**:- दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूर्व की ओर भारत के मध्य भाग में मुख्यतः गुजरात तथा मध्यप्रदेश में स्थित विंध्याचल पर्वत खंड, भारत के उत्तरी व दक्षिणी भाग को अलग करता है।

Scanned with CamScanner

➔ विंध्याचल पर्वत श्रेणी चूना पत्थर से निर्मित है, जो कि गुजरात, मध्यप्रदेश तथा बिहार में विंध्याचल भारनेर, कैमूर तथा पार्श्वनाथ की पहाड़ियों के रूप में 1050 किमी. की दूरी में विस्तृत है।
➔ इस पर्वत श्रेणी की औसत ऊँचाई लगभग 600 से 900 मीटर के मध्य पाई जाती है।
➔ विंध्याचल पर्वतीय क्षेत्र में हीरे का प्रमुख उत्पादक क्षेत्र- पन्ना (मध्यप्रदेश) अवस्थित है।
➔ विंध्याचल पर्वत श्रेणी, नर्मदा नदी घाटी की उत्तरी सीमा का निर्धारण करती है।

* सतपुड़ा पर्वत श्रेणी:- यह एक खंड पर्वत है, जो कि गुजरात तथा मध्यप्रदेश में राजपीपला, गाविलगढ़, महादेव तथा मैकाल पहाड़ियों के रूप में विस्तृत है।
➔ यह पर्वत श्रेणी नर्मदा भ्रंश घाटी की दक्षिणी सीमा तथा तापी भ्रंश घाटी की उत्तरी सीमा का निर्धारण करती है।
➔ इस पर्वत श्रेणी की महादेव पहाड़ियों में सर्वोच्च पर्वत-चोटी- धूपगढ़ तथा पंचमढ़ी प्रसिद्ध पर्वतीय स्थल जैव आरक्षित क्षेत्र है।
➔ महादेव पहाड़ियों की सर्वोच्च चोटी- अमरकंटक से नर्मदा तथा सोन नदी का उद्गम होता है तथा महादेव पहाड़ियों के दक्षिण में स्थित बैतुल के पठार से तापी नदी का उद्गम होता है।

* प्रायद्वीपीय पठारी भाग में स्थित प्रमुख पठार:-

Ⓐ. मालवा का पठार:-
➔ यह पठार अरावली पर्वतमाला, विंध्याचल श्रेणी, मेवाड़ के पठार, मध्य भारत के पठार और बुन्देलखंड पठार के मध्य में स्थित है।
➔ इस त्रिभुजाकार पठार पर पाई जाने वाली लावा की परत से निर्मित काली मिट्टी, कपास की खेती के लिए उपयोगी होती है।
➔ इस पठार पर बेतवा, पार्वती, काली, सिंधु, चम्बल आदि नदियाँ प्रवाहित होती है, जो आगे यमुना नदी में मिल जाती है।

Ⓑ. बुन्देलखंड का पठार:-
➔ मालवा के पठार का उत्तर-पूर्वी भाग को बुंदेलखंड के पठार के नाम से जाना जाता है। बुंदेलखंड में चंबल एवं यमुना नदियों के प्रवाह से बड़े- बड़े बीहड़ खड्ड का निर्माण होने से भूमि ऊबड़-

Scanned with CamScanner

खाबड़ व अनउपजाऊ बन गई है।

➔ इस पठार का ढाल दक्षिण से उत्तर की ओर है, जहाँ केन तथा बेतवा नदियाँ बहते हुये गहरी घाटियों व जलप्रपातों का निर्माण करती हैं।

Scanned with CamScanner